Universal Health Organisation (UHO)

Dt.12/04/2023

प्रति,
श्री मनसुख मांडवीया,
यूनियन हेल्थ मिनिस्टर ऑफ इंडिया।

विषय: राष्ट्रीय रसिकरण प्रोग्राम के अंतर्गत एचपीवी वैक्सीन न शुरू करने के लिए अनुरोध।

प्रिय साहब,

यूनिवर्सल हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन के डॉक्टर और चिंतित नागरिक सरविक्स के कैंसर का महामारी विज्ञान, उसके कारण और वैक्सीन के असरकारक होने ना होने के बारे में कुछ समय से खास अभ्यास कर रहे हैं।

चार महत्वपूर्ण बातें वैज्ञानिक चर्चाओं में से उभर कर आई है।

1. कैंसर रोकने में एचपीवी वैक्सीन की कामयाबी पूरी तरह से स्थापित नहीं हुई थी और हाल ही में हुआ, पहले की गई ट्रायल्स का विश्लेषण उस पर सवालिया निशान खड़ा करता हैं।
2. एचपीवी वैक्सीन के बिना भी सर्वाइकल कैंसर के लिए जो कारण है उसकी लोगों को जानकारी देना और नियमित जांच करना और उसके साथ स्वच्छता के बारे में जानकारी और लोगों की जिंदगी में सुधार आने से सरविक्स के कैंसर के केस और मृत्यु दोनों में कमी आना साबित हो चुका है।
3. एचपीवी वैक्सीन के बाद बहुत सारे देशों में उसकी हानिकारक असर देखने मिली है और जापान में उसी के कारण कोर्ट केस होने के बाद सरकार को यह वैक्सीन बढ़ावा देने से वापस लेना पड़ा है। (1)
4. सरविक्स का कैंसर एक ऐसा रोग है जिसमें वायरस तभी असर करता है जब दूसरे कारण जो कि देश की सामाजिक, आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य सेवाओं पर निर्धारित है वह मौजूद हों।

अगर निवारक है कि नहीं वह देखा जाए, लंदन की न्यूकासल यूनिवर्सिटी और क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने बताया कि "वैक्सीन का असर समझने के लिए की गई प्रभाव ट्रायल के दूसरे और तीसरे चरण की डिजाइन में प्रणाली विज्ञान के हिसाब से बहुत समस्या है।"

लंदन की क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी के मुख्य शोधकर्ता डॉ क्लेर रीस ने बताया कि, "ट्रायल ने बढ़ गये विकारों और बिल्कुल शुरू के विकारों को साथ में दिखाकर वैक्सीन के प्रभाव को बहुत बढ़ा चढ़ाकर दिखाया हो सकता है। सरविक्स में शुरू के विकार होते तो ज्यादा है मगर आगे बढ़े बिना अपने आप ठीक हो जाते हैं। एचपीवी वैक्सीन आगे बढ़े ऐसे कैंसर विकारों को रोकने के लिए काबिल है, यह पूरी तरह से कहने के लिए हमें अपर्याप्त आंकड़े मिले हैं।" (2)

एचपीवी वैक्सीन सरविक्स के कैंसर को रोकने के लिए असरकारक है यह कहना मुश्किल है क्योंकि शुरू का इंफेक्शन और कैंसर होने के बिच में बहुत लंबा समय होता है। (3)

लोगों की जिंदगी में सुधार और स्वच्छता का असरकारक होना हमारे ही देश में साबित हो चुका है।

"इस अभ्यास से यह निष्कर्ष निकलता है कि 1990 और 2019 के बीच भारत में सरविक्स कैंसर की घटना और मृत्यु, दोनों में बहुत महत्वपूर्ण कमी पाई गई है। सबसे ज्यादा कमी 1998 और 2005 में रिपोर्ट की गई है। (4)

इस रोग का देश पर जो बोझ है, "भारत में उम्र के मानकीकृत घटनाएं 100000 स्त्रियों में 14.7 और मृत्यु का दर 100000 स्त्रियों में 9.2 है। (0.0147% और 0.0092%) (4)

"सारांश में 10 साल में प्रायोजित जांच के आयोजन से सरविक्स के कैंसर की घटनाएं 40% हर साल घटाई जा सकती है ऐसे एक जैसे सतत ब्योरेवार सबूत मिले। (5)

एचपीवी वैक्सीन लेने के बाद दूसरे देशों में हानिकर घटनाएं दस्तावेज की गई है।

SII का सर्वाविक वैक्सीन जो टेट्रावेलेंट है वह गार्डासील जैसा ही है। नई शोध ने दावा किया है कि यह सत्य है कि गार्डासील वैक्सिन ऑटोइम्यून रोगों को शुरू या बढ़ावा दे सकती है और दूसरी गंभीर स्वास्थ्य बीमारियां, जैसे कि पोस्चरल ऑर्थोस्टेटिक टेकीकार्डीया सिंड्रोम, न्यूरोपैथी और फाइब्रॉमायाल्जिया कर सकती है। कथित तौर पर गार्डासील को ओवरी का जल्दी फेल होना और बांझपन से जोड़ा गया है। परंतु अमेरिका की सीडीसी अपनी वेबसाइट पर लिखती है कि गार्डासील का ऑटोईम्युन रोग से कोई लेना देना नहीं है। अमेरिका की एनआईएच की नेशनल लाइब्रेरी ऑफ़ मेडिसिन इस विषय पर सीडीसी के विचार को प्रतिबिंबित करती है।

मर्क ने 2006 में शोध और क्लिनकल ट्रायल में कपट करके एफडीएसए मंजूरी ली हो ऐसा भी कथित तौर पर कहा जाता है, जहां वैक्सीन का प्रभाव तोड़ मरोड़ कर दिखाया हो और हानिकारक असर छुपाई गई हों। रिपोर्ट के मुताबिक बेचने के लिए की गए अभियान के झांसे में आकर लाखों मां बाप ने अपनी 13 वर्ष से कम उम्र की बच्चियों को यह वैक्सीन दिया। अंत में अमेरिका की कोर्ट में गार्डासील के सामने एक क्लास एक्शन केस दाखिल हुआ है। (6)

"मैं आगाही करता हूं कि गार्डासील आज तक हुए मेडिकल घोटालों में से सबसे बड़ा होगा क्योंकि एक समय पर इतने सबूत इकट्ठे हो जाएंगे कि यह वैक्सीन वैज्ञानिक और तकनीकी सिद्धि हो सकता है मगर उसका सर्वाइकल कैंसर पर कोई असर नहीं है और उसके कारण हुई हानिकारक असर से कितनी जिंदगी खराब या खत्म हो जाएगी, उससे वैक्सीन बनाने वालों को मुनाफा मिलने के सिवा कोई दूसरा उद्देश्य नहीं होगा। - डॉ. बर्नार्ड डालबेर्क, पहले मर्क में रह चुके फिजीशियन। (7)

अमेरिका में एचपीवी वैक्सीन के कारण हुई हानिकारक घटनाएं

19 अगस्त 2009, जर्नल ऑफ अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन (JAMA) ने सीडीसी और एफडीए वैज्ञानिकों ने लिखा एक लेख प्रकाशित किया जिसमें गार्डासील के कारण जून 2006 से दिसंबर 2008 हुई हानिकारक घटना जो VAERS में दर्ज हुई उसकी समीक्षा की। इस समय के दरमियान 12424 हानिकारक घटनाएं घटीं, उसमें से 772 (6.2 %) गंभीर प्रकार की थी।

गार्डासील के पैकेट में दी गई सूचना में जो चेतावनी दी गई है उसमें बेहोश होना, बुखार, चक्कर आना, उल्टी, सिरदर्द और बाजार में बेचने के बाद की हुई निगरानी में गुलेन बारी सिंड्रोम, ट्रांसवर्स माईलाइटिस, मोटर न्यूरॉन डिजीज, विनस थ्रोम्बोएम्बोलिक इवेंट्स, पेनक्रिएटाइटिस और ऑटोइम्यून रोग शामिल है।

ऑस्ट्रेलिया में हुई हानिकारक घटनाएं
2007 में ऑस्ट्रेलिया में ७.३/१००००० हानिकारक घटनाएं हुई जो 2003 से सबसे ज्यादा थी और 2006 से 85% ज्यादा हुई।

अमेरिका में 80% तक वैक्सीन देने के बाद भी आगे बढ़ चुके सरविक्स के कैंसर की घटनाएं 2001 से 2018 में हर साल 1.3 प्रतिशत बढ़ रही है। (8)

भारत में दूसरे रोग संबंधित जोखिम पैदा करने वाले कारण बहुत अच्छी तरह साबित हुए हैं जैसे कि कम उम्र में शादी, ज्यादा लोगों के साथ शारीरिक संबंध, बहुत ज्यादा बच्चे होना, स्वच्छता की कमी, कुपोषण, गर्भनिरोधक गोली और जानकारी का अभाव।

महाराष्ट्र में ज्यादा जोखिम वाला वायरस ज्यादा उम्र, कम पढ़ाई, मेहनती काम, कम उम्र में पहला शारीरिक संबंध और विधवा या शादी से अलग हो गए होना, ऐसे लोगों में पाया गया। (9)

इन सब कारणों पर ध्यान देकर, जांच करने के प्रोग्राम बढ़ाना वही हमारे देश के लिए सलाह कारक है। प्रभाव के ठोस सबूत के बिना सबको वैक्सीन देना, जिनको बीमारियां हो उनका इलाज करने से कम दाम में नहीं होता। सबको वैक्सीन लेने के लिए जबरदस्ती की जाती है मगर दवाई तो बहुत कम लोगों को दी जाती है। लोगों के टैक्स में से आए पैसे में से वैक्सिन देने में बहुत ज्यादा पैसा बर्बाद होता है जबकि बहुत कम लोगों को इसका जोखिम है।

ऊपर बताई गई अनिश्चितता का समाधान किए बिना भारत के राष्ट्रीय, सबको देने का टीकाकरण प्रोग्राम में एचपीवी वैक्सीन डालना असामयिक होगा। सबको टीका देने से कंट्रोल ग्रुप खत्म हो जाने से अनिश्चित तत्व का भविष्य में भी समाधान नहीं कर सकते, जोकि सबूत पर निर्धारित दवाई करने के लिए बहुत जरूरी है।

हम पूरे देश में सब सुन सके और देख सके ऐसी वैक्सिन की तरफदारी करते और उसका विरोध करते हुए सब विचारों को दिखा सके, ऐसी पारदर्शी चर्चा दूरदर्शन, ऑल इंडिया रेडियो पर चाहते हैं। उसके पहले इसे राष्ट्रीय प्रोग्राम में ना डाला जाए।

हम आपको खुद आकर, इससे भी ज्यादा एचपीवी वैक्सीन नहीं लाने के लिए के अनुरोध के संबंधित आंकड़े और हकीकत, बताना चाहते हैं। (10)

बहुत शुभकामना के साथ,

यूनिवर्सल हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन की पूरी टीम।

References:

(1) https://ijme.in/articles/lessons-learnt-in-japan-from-adverse-reactions-to-the-hpv-vaccine-a-medical-ethics-perspective/?galley=html

(2) https://www.rsm.ac.uk/media-releases/2020/doubts-raised-about-effectiveness-of-hpv-vaccines/

(3) https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC6811952/

(4) Secular trends in incidence and mortality of cervical cancer in India and its states, 1990-2019: data from the Global Burden of Disease 2019 Study - PMC (nih.gov)

(5) Estimating the impact of an organised screening programme on cervical cancer incidence: A 26-year study from northern Italy - PubMed (nih.gov)

(6) https://empirediaries.com/2023/01/26/hpv-vaccines-in-india/

(7) https://childrenshealthdefense.org/community-forum/2023-ca-ab659/

(8) https://www.medscape.com/viewarticle/980253?src=mkm_ret_221207_mscpmrk_Gyno_monthly&uac=116656PT&impID=4929048

(9) https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC4404964/

(10) https://uho.org.in/files/hpv-vaccine-lets-debate.pdf